मेहरे फुग़ाँ

नौहों का मजमुआ

मुसन्निफ

सैय्यद विरासत अली रिज़वी

'फिक्र लखनवी'

वल्द

सैय्यद महोम्मद मुस्तफा

सैय्यद विरासत अली रिज़वी वल्द सैय्यद महोम्मद मुस्तफा - एक सूरए फातिहा के मुतामन्नी

तआरुफ

''मेहरे फुगाँ'' अज़ीजी सैय्यद विरासत अली के नौहों का मजमुआ है।

मुझे यह देखकर खुशी हुई कि नौहों में जो खूबियाँ होना चाहिए यहाँ मौजूद हैं। ज़बान की सादगी व सफाई व सलासत के साथ-साथ इज़हारे जज़्बात में हुस्न है, ख़ुलूस है, सदाक़त है और इसी में नौहों के पुरतासीन होने का राज़ है।

इस मजमुए की ख़ुसीसियत यह भी है कि हर तारीख़े ग़म के वास्ते अलग-अलग नौहे हैं और हर मासूम की वफात या शहादत की तारीख़े भी दर्ज हैं।

मेरी दुआ है कि यह नौहे मकबूल हों और ईसाले सवाब का वसीला बनें।

असर लखनवी

14 जुलाई 1955 ई.

अरज़े फिक्र

मेरी ज़िन्दगी कुछ इस क़दर आलाम व अफ़कार में गुज़री कि बरादरम मौलवी सैय्यद जफ़र हुसैन साहब ज़फर ने फिक्र तख़ल्लुस ही रख दिया- शायरी के लिए दिमाग़ी सुकून व इत्मेनान चाहिए जो बदक़िस्मती से मेरे वास्ते अब तक मफ़क़ूद है। तख़ल्लुस महज़ चन्द नौहों की बयाज़ (मेहरे फुग़ाँ) तक महदूद होकर रह गया है। अगर बरादरे मुहतरम आली जनाब नवाब जाफ़र अली खाँ साहब (असर लखनवी) इसलाही नज़र से मुलाहेज़ा फरमाने के बाद हिम्मत अफ़ज़ाई न फरमाते तो मुझे इस बयाज़ को छपवाने की जुर्रत ही न होती। मैं मौसूफ़ का सिदक़े दिल से निहायत शुक्रगुज़ार हूँ।

सैय्यद विरासत अली रिज़वी

'फिक्र लखनवी'

मुवरिख़ा 27 जुलाई 1955 ई.

तारीखे इन्तेकाल 10 सितम्बर 1960

फेहरिस्त (Table of Contents)

चाँद रात

29 जिलहिज

खिची हैं तेग़ के हैं चर्ख पर हिलाले अज़ा
सवादे शब है कि खेमों से है धुआँ उठा

न चाँद देखते ही किस तरह बहें आँसू
इसी महीने में अहमद का घर तबाह हुआ

यह चाँद वह है कि दसवीं को जिसकी हाय गज़ब
सरे हुसैन हुआ वक़्ते अस्र तन से जुदा

यही वह चाँद है जिसमें के एहलू कूफ़ा ने
जलाए ख़ेमे और एहले हरम को लूट लिया

इमाम वक़्त जो थे बादे सरवरे ज़ीशा
इसी महीने में आदा ने उनको क़ैद किया

हुआ था जिनके मकाँ से रिवाज़ परदे का
इसी महीने में छीनी सरों से उनके रिदा

थे जमा कूचओ - बाज़ार में तमाशाई
हुजूमे आम मे एहले हरम का सर था खुला

ख़ुदा के वास्ते कुछ जालिमों तरस खाओ
हुजूमे आम कुजा आले बूतुराब कुजा

यज़ीद तख़्त पर है ज़ेरे तख़्त फर्क़े इमाम
सरे हुसैन कुजा मजलिसे शराब कुजा

है इशतियाक़े ज़ियारत से हिन्द में बेताब
बुला लो 'फिक्र' को रौज़े पर अपने ऐ मौला

यकुम महोर्रम

ऐ मोमिनो जिस माह में मारे गए सरवर - उसकी है यकुम आज
जिस माह में सर नंगे फिरीं जैनबे गुज़तर - उसकी है यकुम आज

मशकीज़ा सकीना का लिये नहर पर आके - शानो को कटा के
जिस माह में मारे गए अब्बासे दिलावर - उसकी है यकुम आज

बादे रुफाक़ा कत्ल के मैदान मे आके - बरछी की अनी से
जिस माह में मारे गए हम शक्ले पय्यम्बर - उसकी है यकुम आज

जन्गाह में हाथों पर शहे हर दोसरा के लब खुश्क दिखा के
जिस माह में बेशीर सिधारा सूए कौसर - उसकी है यकुम आज

जिस माह में सर तन से जुदा हो गया शह का - अफसोस की है जा
जिस माह में तर खूं से हुआ शिमर का ख़न्ज़र - उसकी है यकुम आज

सर पीटो मुहब्वों के शहे कौनों मकाँ की - सुल्ताने ज़माँ की
जिस माह में पामाल हुयी लाशे मु◌ताहर - उसकी है यकुम आज

ज़ेहरा व रसूले मदनी, हैदरो सफदर - और हज़रते शब्बर
जिस माह में बेचैन रहे कब्र के अन्दर - उसकी है यकुम आज

क्यों 'फिक्र' महोर्रम में भी क्या दिल को हो फरहत - एक गोना मसर्रत
जिस माह में मैं जाऊँगा कब्रे शहे दीं पर - उसकी है यकुम आज

दो महोर्रम

दूसरी माहे मर्होरम की है रोएँ मोमिनीयं
कर्बला में आ चुके हैं मालिके ख़ुल्दे बरीन

बिस्तो हशतुम को रजब की जब चले सुल्ताने दीन
और आबादा हुयी चलने या बीमारो हज़ी

शह ने फरमाया के बीमारी में क्योंकर साथ लूँ
फात्मा सुग़रा अभी कुछ रोज़ तुम ठहरो यहीं

जब किसी जा पर हमारा होगा ऐ बेटी क़याम
भेजकर अकबर को बुलवा लेंगे हम तुमको वहीं

शह से सुग़रा ने कहा अच्छा अगर जाते हैं आप
रहने दीजिए मेरे छोटे भाई को बाबा यहीं

जान से अपनी ज़्यादा है मुझे असग़र अज़ीज़
इसकी फुरक़त में मैं मर जाऊँगी बीमारे हज़ीन

बाद इसके गोद में सुग़रा ने असग़र को लिया
और कहा रोकर सिधारें अब शहे दुनिया ओ दीन

जब बहुत इसरार असग़र के लिये शह ने किया
तब यह बाते यासो हसरत से भरी सुग़रा ने कीं

खुद से गर असग़र चला जाए किसी की गोद में
तो खुशी से साथ ले जाएँ इमामल मुत्तक़ीं

सुन के यह फैलाए सबने हाथ असग़र की तरफ़
पर न उतरा गोदसे वह कौकबे - चरख़े बरीं

निज़्दे असग़र उसके बाद आए हुसैन इब्ने अली
और कहा यह कान में असग़र के क्यों ऐ महजबीन

बख़्शीशे उम्मत का क्या तुमको नहीं मुतलक़ ख़्याल
अब चलो कब्रों बला ऐ नजमे खत्मुल मुरसलीन

सुनके यह आवाज शह की गोद में आया वह तिफ़्ल
अल गरज़ राही हुए वाँ से सिपेहसालारे दीन

वह सफ़र एहले हरम का और वह बच्चों का साथ
धूप की हिद्दत हवाएँ गरम और तपती जमीं

रास्ते की सख्तियाँ सहते हुए वारिद हुए
दूसरी माहे अज़ा को कर्बला में शाहे दी

'फिक्र' को अब हिन्द में रहना बहुत दुशवार है
अपने रौज़े पर बुला लो या इमामल मुत्तकीं

तीन महोर्रम

तीसरी माहे अज़ा की आयी जब ऐ मोमनीन
अर्श को जुमबिश हुयी, हिलने लगा चरखे बरीं

छोड़कर शहरे मदीना आए हैं कर्ब्रों बला
राक़िबे दोशे पय्यमब्र, रहमतुल - लिल आलेमीन

इस तरफ तो ख़ेमए एहले हरम होते हैं नज़्ब
चार सू से आ रहे हैं उस तरफ आदाए दीन

किस लिए यह हो रहा है कर्बला में अशदहाम
जंग पर आमादा है किससे यह अफवाजे लईन

उससे लड़ने के लिये आदाए दींन तैय्यार हैं
खुद समझते हैं जिसे दिल बन्दे ख़तमुल मुरसलीन

हलअता मौजूद है कुरआन में जिसके लिए
ज़ीनते अर्शे ख़ुदा है और इमाम-अल-मुतक़ीन

सैकड़ों खत भेजकर पहले तलब उसको किया
और अमादा है बहरे कत्ले अब आदाए दीन

मुनहरिफ सारा ज़माना हो गया मज़लूम से
तालिबे बैयत इमाम वक्त से हैं मुशरेकीं

ग़ैर की बैयत करे किस तरह फरज़न्दे रसूल
यह सितम कैसा है बोलो तो सही ऐ एहलेकीन

कर दुआ ऐ 'फिक्र' हक़ से फिर ज़ियारत हो नसीब
दम अगर निकले तो निज़दे रौज़ए सुल्ताने दीन

चार महोर्रम

महोर्रम की है चौथी दिल पर तारी एक नया ग़म है
ज़मीने कर्बला पर ख़ेमए शाहे दो आलम है

चली आती हैं फौज़ें कत्ल करने शाहे वाला को
तलातुम में ज़मीने कर्बला जुमबिश में पैहम है

इधर बेताबियाँ एहले हरम की बढ़ती जाती हैं
उधर प्यासा लहू के शाह का हर एक अज़लम है

लईन शादाँ हैं वाँ फ़ौजों की कसरत बढ़ती जाती है
यहाँ तन्हा इमामे दी हैं और सकते का आलम है

शक़ीं ख़ेमों के पास आते हैं दौड़ाते हुए घोड़े
डरे जाते हैं बच्चे बीबियों में शोरो मातम है

हुआ है कर्बला में आपका जिस रोज़ से आना
इसी तारीख से फौज़ों का नरग़ा शह पर पैहम है

तलब फरमाईए अब कर्बला में 'फिक्र' को आक़ा
कि इसके दिल का रन्जो ग़म से अब कुछ और आलम है

पाँच महोर्रम

पाचवीं माहे मर्होरम की हुई जब मोमीनीं
कर्बला में फ़ौज लेकर आ गया शिमरे लईं

क्या सितमगर थे के निज़दे खेमऐ एहले हरम
घोड़े दौड़ाते हुए आते थे पैहम अहले कीन

चह चमक नैज़ों की और झनकार तलवारों की आह
सुनके बच्चे खौफ़ से गिरते थे बालाऐ ज़मीं

शह से जब जैनब ने पूछा यह के अब आया है कौन
सर झुका कर आप बोले है यही शिमरे लईं

जैसे ही नामे लईं शह की ज़बा पर आ गया
हज़रते ज़ैनब हुईं हद से सिवा अनदोहगीं

शह ने फरमाया बहन क्यों इस क़दर है इज़तिराब
यास से कहने लगीं यूँ बिन्ते ख़तमुल मुरसलीन

खुद सुना है मैंने नाना को यह फरमाते हुए
कातिले शब्बीर होगा एक दिन शिमरे लईं

आप ही फरमाईए फिर क्यों न हूँ मैं बे हवास
पंजेतन में बस फ़क़त है आप ही या शाहेदीन

सुन के यह शह ने कहा सब्रों रज़ा से काम लो
मसलहत है हक़ की, क्यों हो इस क़दर अन्दोहगीं

या रसूल इब्ने अली सदका रसूलिल्लाह का
कर्बला में 'फिक्र' की हो कब्र रौज़े के क़रीं

छह महोर्रम

शशुम माहे अज़ा को कर्बला में हशर बरपा था
हुसैन इब्ने अली से मुनहरिफ सारा ज़माना था

ख़्यामे शाहे दीं उठवा रहे थे नहर से आदा
अलमदारे हुसैन इब्ने अली को ग़ैज आता था

यहाँ तो रोकते थे जंग से अब्बास को सरवर
लड़ाई आज ही हो हर शक़ी का वाँ इरादा था

चढ़ा कर जिसको कांधे पर पयम्बर फख़्र करते थे
उसी इब्ने रसूललिल्लाह पर फ़ौज़ों का नरग़ा था

ब मजबूरी हटाए उसने अपने खे◌ेमे दरिया से
के जिसकी मिल्क में ऐ मोमिनो हर एक दरिया था

इधर तो नहर से खेमे हरम के उठते जाते थे
उधर शब्बीर की आँखों से ज़ारी ख़ूँ का दरिया था

यह कैसा इन्क़िलाब आया ज़माने में के दरिया पर
ख़याम आदा के उस जा हैं जहाँ पर शह का खेमा था

हबाब इस ग़म से अब तक सर पटक़ते है लबे साहिल
के शाहे बेहरो बर के वास्ते दरिया पा पहरा था

यह किस्मत थी जो एक शब भी रहे ऐ 'फिक्र' रौज़े पर
हम ऐसे आसियों का कर्बला में कब ठिकाना था

सात महोर्रम

सातवी माहे अज़ा की आज है ऐ मोमीनीन
बन्द पानी कर चुके हैं शाह पर आदाए दीन

पहरे बिठलाए गए हैं नहर पर इस वास्ते
ता न पाएँ एक क़तरा भी इमाम-अल-मुत्तक़ीं

जानवर तक नहर से सेराब हों अफसोस है
और तरसे एक कतरे को शहे दुनिया ओ दीन

है यह दिन मखसूस बहरे क़ासिमे गुलगूँ क़बा
हालते इब्ने हसन भी कुछ सुनें अब हाजेरीं

इस क़दर कमसिन था फरजन्दे हसन ऐ मोमनीं
पुशते मरकब पर बिठाने आए थे खुद शाहे दीन

नासिरों को जमा करके जब शबे आशूर आह
दे चुके सबको शहादत की ख़बर सुल्ताने दीन

जोड़कर हाथों को क़ासिम ने किया यह अर्ज़ तब
नाम मेरा भी शहीदों में लिखा है या नहीं

शह ने पूछा मौत कैसी है बता ऐ नौनिहाल
शहद से ज़ायद है शीरी, तब यह बोला वह हसीं

सुन के यह शह ने कहा हाँ तुम भी कल होगे शहीद
और अली असग़र को भी मारेंगे यह आदाए दीन

नामे असग़र सुनते ही क़ासिम ने घबराकर कहा
ऐ चचा खेमों में भी दर आएगे क्या ये लईं

हों फिदा जाने हमारी, किस क़दर ग़ैरत थी आह
ध्यान से बे परदीगी के हो गए क़ासिम हज़ीन

जिनके परदे का तुम्हें इतना था ऐ मौला ख़्याल
आम मजमे में खुले सर है वह बाहाले हज़ीन

अब मैं कहता हूँ के आओ शाम के दरबार में
और ज़रा देखो तो हाले इतरते सुल्ताने दीन

अब जिगर फटता है नौहा ख़त्म कर ऐ फिक्र' जल्द
और दुआ कर यह के दम निकले तो रौज़े के करीब

आठ महोर्रम

है मख़सूस आठवीं माहे अज़ा की जिस दिलावर से
बड़ी उलफत थी उस जर्रार को सिब्ते पयम्बर से

तलाया फिर रहे थे शह शबे आशूर जब हर सू
तो कुलसूम उस घड़ी यह कह रही थीं उस दिलावर से

के भय्या सुबह को कुर्बानिये आले महोम्मद है
निसार औलादे अपनी सब करेंगे शाहेदीं पर से

नहीं है कोई भी फ़रज़न्द मुझ दुखिया की दुनिया में
हिजाब आएगा कल के दिन मुझे सिब्ते पयम्बर से

सुनी जब यास की तक़रीर यह अब्बासे गाज़ी ने
तो रखकर सर को कदमों पर कहा कुलसूमे मुज़तर से

हूँ मैं भी तो गुलाम एक आपका क्यों आप को ग़म है
मुझे कल आप सदक़े कीजिएगा शाहेदीं पर से

ग़रज़ हमशीर को तस्कीन देकर चुप हुए मौला
ख़िताब अब मैं यह करता हूँ अलमदारे दिलावर से

के ऐ आक़ा ख़बर लिल्लाह लीजिए रोज़े आशूरा
सितमगर ले गए चादर उसी कुलसूम के सर से

उसी घर में चले आए लई, लीजिए ख़बर मौला
के जारी रस्म पर्दे की हुयी थी आह जिस घर से

शक़ी आबिद को लेकर अब चले हैं जानिबे कूफा
उठेगा बार क्योंकर तौक़ का बीमारो लाग़र से

बुलालीजिए सुए कर्बोबला अब 'फिक्र' को मौला
के सदमे उठ नहीं सकते हैं उसके क़ल्बे मुज़तर से

शहादते हज़रते अब्बास

आठ महोर्रम

यह बोले हज़रते अब्बास आके सरवर से
के सब्र हो नहीं सकता है अब इस अहक़र से

हैं बच्चे तश्ना दहानी से जाँ बलब मौला
सदाए आला तश आती है खेमों के दर से

जो इज़्ने जंग नहीं लाने दीजिए पानी
के मेरी प्यारी सकीना न आब को तरसे

यह सुनके हज़रते शब्बीर ने झुकाया सर
समझ ली भाई की मर्ज़ी सुकेते सरवर से

उठा के मशको अलम और लेके एक नैज़ा
चला दिलेर रज़ा पाते ही बरादर से

भगाके फौज़े सितम और भरके नहर से मशक
सुए ख़याम फिरे लड़ते फौजें़ अकफ़र से

थी मशक दोश पर और दस्ते रास्त में नैज़ा
जो एक लईं ने किया उस पर वार खन्ज़र से

संभाला मशको अलम बायें हाथ से लेकिन
तमाम फौज की थी जंग एक दिलावर से

बिल आखिर उस पर भी तलवार एक शक़ी की पड़ी
लहू का बह गया दरिया तने मुताहर से

मगर थी क़ोशिशें अब्बास पानी बच जाए
के सुरखुरूँ हूँ पिलाकर मैं बिन्ते सरबर से

दबा के दाँतों में तस्मा, बढ़े थे आप अभी
के आके तीर पड़ा लशकरे सितमगर से

इधर तो मशक छिदी धार निकली पानी की
एक आह सर्द उधर निकली क़ल्बे मुज़तर से

कुछ और आगे बढ़े थे के सर पर गुर्ज़ पड़ा
ख़िताब करके कहा तब जरी ने सरवर से

के जान अपनी फिदा की गुलाम ने मौला
दुआ है सेर हूँ अब दीदे रूए अनवर से

सदा यह सुनके कमर थाम के चले हज़रत
यह कहते जाते थे रो-रो के शाह अकबर से

किधर से आयी निदा जल्द ले चलो बेटा
के मरते वक़्त गले मिल लूँ मैं बरादर से

गरज़ के पहुँचे तो ग़लतान थे खून में अब्बास
न देखी जाती थी हालत जरी की सरवर से

उठा के सर रखा ज़ानू पर और रोके कहा
अगर हो कोई तमन्ना कहो बरादर से

कहा यह हज़रते अब्बास ने कि ऐ आक़ा
था दिल मंे शौक़े ज़ियारत मगर मुकद्दर से

एक आँख तीर से ज़ख्मी औद दूसरी पर
जमा है खून निकल कर शिगाफ्ता सर से

अबा का दामन उठाकर वह खून शाहेदीं ने
छुड़ाया दश्त में रो-रो के दस्ते अतहर से

रुखे हुसैन को हसरत से देखकर एक बार
क़रीब अपने बुलाकर कहा यह अकबर से

मुझे यक़ीन है पसे क़त्ल फौजे कूफा ओ शाम
करेगी बेअदबी जिस्में शाहे सफदर से

सिपुर्द करके मेरी लाश इब्ने साद को तुम
मेरी तरफ से यह कह देना बानी ए शर से

ऐवज़ हुसैन की पामाल कर दे लाश मेरी
के रोज़े हशर खिजालत न हो पयम्बर से

ख़िताब शह से किया फिर के मेरे लाशे को
हुजूर उठाएँ न लिल्लाह इस जगह पर से

किया था वादा सकीना से पानी लाने का
हूँ शर्मसार मैं आक़ा की प्यारी दुख़तर से

यह कहते-कहते सिधारे सूए, जिना अब्बास
हुसैन रोए लिपटकर तने बरादर से

दुआ करो बस अब ऐ 'फिक्र' तुम के या अब्बास
करीब क़ब्र मिले रौज़ए मुनव्वर से

शबे आशूर - नौ महोर्रम

ऊदू की फौज में कत्ले शहे बे कस का सामाँ है
हमारा सैय्यदो आक़ा फक़्त एक शब का मेहमाँ है

मिली है मोहलत एक शब की जो आदा से इबादत की
तो सर्फ़े ताअते माबूद हर एक ब दिलो जा है

इसी शब नासिरो को जमा करके शाहे वाला ने
कहा सबसे सहर को कत्ल का मेरे तो सामां है

तुम्हारी गरदनों से अपनी बैयत में उठाता हूँ
जिधर चाहे चले जाओ तुम्हारा हक़ निगेहबां है

कहा हर एक जरी ने गिर के क़दमों पर शहे दीं के
नहीं छूटेगा दामन हमसे जब तक जिस्म में जां है

खुदारा हम ग़ुलामों को न क़दमों से जुदा कीजे
फिदा हो जाएँ हम सब आप पर यह दिल मे अरमाँ है

सन इकसठ जुमे की रात और सन्नाटे का वह आलम
है तारीकी ज़माने भर मे ज़ुल्फ़े शब परेशाँ है

बुला लो कर्बला में 'फिक्र' को ऐ सैय्यदे वाला
वहीं की सरज़मी पर कब्र हो यह दिल में अरमा है

उधर तो फतह की फौज़ें - दस महोर्रम

उधर तो फतह की फौज़ें उदू में शादमानी है
इधर अन्सारे शह पर तीन दिन से बन्द पानी है

उधर तो आतिशे ग़ैजो ग़जब से सुखऱ् है नारी
इंधर रंगे रुखे शह मिसले खुरशीद अरग़वानी है

अली अकबर की सूरत देखकर हर एक कहता था
पिसर सरवर का यह अहमद की तस्वीरे जवानी है

कमर भी ख़म है दिल भी है शिकस्ता शह का सदमों से
और उस पर क़हर यह बेटे की मय्यत भी उठानी है

गले में तौक़ बेड़ी पाओं में, हाथों में हथकड़ियाँ
गिरे पड़ते हैं आबिद राह में यह नातवानी है

चला मरने जवाँ बेटा तो सरवर ने कहा रोकर
इलाही ख़ैर करना यह पयम्बर की निशानी है

उधर तो फौजे कूफ़ा नहर से सेराब होती है
इधर सिब्ते नबी पर तीन दिन से बन्द पानी है

तड़पती हैं मिसाले बर्क़ प्यासों के लिए मौजें
तलातुम में इसी से अलक़मा का आज पानी है

तमन्ना कर्बला जाने की रहती है सदा दिल को
अगर है तो यही एक 'फिक्र' को रन्जे नेहानी है

सवारी रुखसते इमाम ऐ हुसैन (अलै.)

दस महोर्रम

या हज़रते शब्बीर खुदा हाफ़िज़ो नासिर
ऐ साहेबे तौक़ीर खुदा हाफ़िज़ो नासिर

फरज़न्दे रसूल इबने अली शाहे दो आलम
शहन्शाहे दिलगीर खुदा हाफ़िज़ो नासिर

मासूमए कौनैन की आग़ोश के पाले
ऐ साहेबे तौक़ीर ख़ुदा हाफ़िज़ो नासिर

सरदारे जवानाने जिना ज़ीनते आलम
ऐ अरश की तनबीर खुदा हाफ़िज़ो नासिर

किस तरह ग़ुलाम आपको रुखसत करें मौला
क्योंकर कहें दिलगीर खुदा हाफ़िज़ो नासिर

मोहताजे कफन बे वतनों ओ साबिरो शाकिर
ऐ सब्र की तस्वीर खुदा हाफ़िज़ो नासिर

बे यारो भद्दगार शहीदे रहे ख़ालिक
ऐ कुशतए शमशीर खुदा हाफ़िज़ो नासिर

तशना दहन आवारा वतन शाहे शहीदाँ
ऐ बेकसो दिलगीर खुदा हाफ़िज़ो नासिर

ऐ 'फिक्र' हम अब भी न गए रौज़ए शह पर
और जाते है शब्बीर खुदा हाफ़िज़ो नासिर

अलविदा बराय दस महोंरम

आके ख़ेमे में कहा शह ने के ख्वाहर अलविदा
मैं भी मरने जाता हूँ ऐ बिन्ते हैदर अलविदा

बाद मेरे सब्र करना जो मुसीबत भी पड़े
अलविदा ऐ ज़ैनबो कुलसूमो मुज़तर अलविदा

जाके आबिद के सरहाने फिर यह बोले शाहेदी
ऐ मेरे बेकस पिसर बीमारों लाग़र अलविदा

तुम इमामे बक़्त होगे मेरे मर जाने के बाद
सब्र हर हालत में करना बहरे दावर अलविदा

बेड़ियाँ और तौक़ पहनाए तुम्हें गर अशक़िया
बद दुआ करना न ऐ दिल बन्दे हैदर अलविदा

फिर गले लिपटा के यू बाली सकीना से कहा
ऐ मेरे सीने पा सोने वाली दुख़तर अलविदा

ज़िद न करना बाद मेरे ऐ मेरी नूरे नज़र
अब मुहाफिज है तेरा खल्लाक़े अकबर अलविदा

आँसुओं के तार ने दिल की रगें सब तोड़ दीं
चुप रहो रो लेना बेटी मुझसे छुटकर अलविदा

प्यार करके फिर सकीना को उतारा गोद से
और कहा एहले हरम से शह ने रोकर अलविदा

आख़री सोहबत है यह और आख़िरी यह गुफ्तुगू
अब न कुछ तुमसे कहूँगा ताबा महशर अलविदा

हिन्द से अब तक न निकले तुम तो ऐ 'फिक्रे' हज़ी
और रुख़सत कर दिया सरवर को कहकर अलविदा

रुख़सते आखिर इमाम हुसैन (अलै.)

जब हुआ हल्क़े अली असग़र निशाना तीर का
और शाहेदीं दफन लाशा कर चुके बेशीर का

आके ख़ेमों में किया सब बीबियों से यह ख़िताब
अब जहाँ में कोई भी मूनिस नहीं शब्बीर का

तुम सबों को हक़ तआला की हिफाज़त में दिया
ध्यान रखना बाद मेरे आबिदे दिलगीर का

क़ैद इस बीमार को आदा करेंगे मेरे बाद
क़हर होगा बार उठाना तौक़ और ज़न्जीर का

दुर सकीना के उतारेंगे तँमाचें मारकर
और कोई मूनिस न होगा दुखतरे शब्बीर का

हाय नन्हा सा गला रस्सी से बाधेंगे शरीर
हाल क्या उस वक्त होगा बेकसों दिलगीर का

गर कोई पूछेगा उनसे तुम सबों का हाले ज़ार
तो कहेंगे है यह कुनबा शाहे खैबर गीर का

सब्र करना हर मुसीबत पर तुम्हें हक़ की क़सम
मिट नहीं सकता मिटाए से लिखा तक़दीर का

देर होती है खुदा हाफिज सलामे आख़िरी
अब बहुत मुशताक़ हूँ मैं शिमर की शमशीर का

ख़ूँ के आँसू अब क़लम रोता है बस ऐ 'फिक्र' बस
फिर गया आँखों में नक्शा रोज़ए शब्बीर का

तशते पुरख़ूँ में नज़र जब शाह का सर

तशते पुरख़ूँ में नज़र जब शाह का सर आ गया
सब पुकारे लो शफ़क़ में माहे अनवर आ गया

शिमर से पानी तलब करते ही करते वक़्ते अस्र
बढ़के प्यासे के गले तक आबे ख़न्ज़र आ गया

बहरे ख़ूँ में ग़र्क होकर हाय आशूरे के दिन
तशना कामों का सफ़ीना निज़दे कौसर आ गया

ले चले सर नंगे जब एहले हरम को अशक़िया
बनके चादर ख़ुद ग़ुबारे दशत सर पर आ गया

ज़ोफ बोला आबिदे बीमार खोलो ग़श से आँख
बेड़ियाँ लेकर करीं जिस दम सितमगर आ गया

शह ने देखा यास की नजरों से सूए आसमाँ
हल्क़ के नज़दीक जब क़ातिल का खन्ज़र आ गया

देखने वाले यह समझे है शफ़क़ में आफताब
ख़ूने फ़रके शाह जब चेहरे पर बहकर आ गया

दर्द लैला के कलेजे में उठा एक दफ़ातन
जब कभी लब पर किसी के नामे अकबर आ गया

ज़िन्दगी जो 'फिक्र' की शौक़े ज़ियारत में कटी
जा कनीं के वक़्त खुद मौलाए क़मबर आ गया

प्यास अतफ़ाले शहेदीं की

प्यास अतफ़ाले शहेदीं की बुझाने के लिए
जाते हैं अब्बासे ग़ाज़ी पानी लाने के लिए

बोले शह दिल थामकर मक़तल को जब अकबर चले
दू रिज़ा किस तरह बरछी दिल पर खाने के लिए

लाशे अकबर आयी खेमे में तो मादर ने कहा
क्या गए थे घर से मक़तल ख़ुल्द जाने के लिए

नींद अजल की आ गयी तुमको मेरे कड़ियल जवाँ
और हम मुशताक़ थे दूल्हा बनाने के लिए

कैसी यह ग़फलत है बस अब सो चुके बेटा उठो
माँ सरहाने आयी है तुमको जगाने के लिए

मय्यते असगर पा मादर ने कहा सर पीटकर
रन में क्या बेटा गए थे तीर खाने के लिए

घुटनियों चलने न पाए थे के मौत आयी तुम्हें
माँ अकेली रह गयी सदमें उठाने के लिए

याँ गिरी बाली सकीना रन में लाशें शाह पर
वाँ चला शिमरे लई दुर्रे लगाने के लिए

या हुसैन अब 'फिक्र' को कब्रों बला बुलवाइए
दिल बहुत बेताब है रौज़े पा जाने के लिए

तुरबते बेशीर पर कहती थी माँ

तुरबते बेशीर पर कहती थी माँ असग़र उठो
कब तलक तन्हाई में सोओगे ऐ दिलबर उठो

है अंधेरा घर में नज़रों में जहाँ तारीक है
कब तलक पिन्हाँ रहोगे ए महे अनवर उठो

हम सबों को क़ैद करके अशक़िया ले जाऐगें
किस तरह तन्हा तुम्हें छोड़ेगी यह मादर उठो

गोद खाली देखकर पूछे अगर सुग़रा तुम्हें
क्या कहे इस नातवाँ से मादरे मुज़तर उठो

गोद से मेरी जुदा होते न थे तुम तो कभी
नींद इस सुनसान बन में आ गयी क्योंकर उठो

किसलिए नाराज़ हो आओ मना लूँ मैं तुम्हें
कुछ जुबां से तो कहो सदक़े गयी मादर उठो

दूध दो दिन से न पाया इसलिए रूठे हो क्या
बेकसो मजबबूर है माँ है ऐ मेरे दिलबर उठो

किस तरह तन्हा अंधेरी रात में नींद आएगी
आओ सीने से लगा लें माँ अली असग़र उठो

हो गई है ज़िन्दगी दुश्वार अब अफकार से
'फिक्र' रौज़े पर चलो बस या अली कहकर उठो

दस मुहर्रम (शाम ग़रीबाँ)

रोज़े आशूरा पसे कत्ले इमामुल मुत्तक़ीं
मालो ज़र लूटा जलाए खेमाहाय शाहेदीन

एक क़नाते सोखता की आड़ में सब बीबियाँ
खाक पर बैठीं थीं बच्चों को लिए बादिल हज़ीं

एक तरफ़ बच्चे पड़े थे ग़श में भूख और प्यास से
सेरो सेराब उस तरफ़ होने लगीं फो़जे लईं

जानवर तक फौज के जब पा चुके आबो तआम
तब गिज़ा भेजी पए अतफ़ाल शाहनशाहेदीन

ज़ौजए हुर लेके मशके आब और कुछ रोटियाँ
फौजे आदा से गई जिस वक्त बच्चों के करीब

बीबियाँ संभझीं के आते हैं लईन फिर लूटने
हज़रत जैनब बसद अनदोह फरमाने लगीं

रोते रोते भूखे प्यासे बच्चे सोए हैं अभी
लूट लेना सुबह आकर क़ैद है हम सब यहीं

मैं हूँ बीबी ज़ौज़ए हुर लाई हूँ आबो तआम
बाअदब उसने कहा यूँ आके जैनब के करीं

है गुरस्ना और प्यासे तीन दिन से नौनेहाल
दीजिए पानी उन्हें या ख्वाहरे सुलताने दीन

रख दिया यह कहके फर्शे ख़ाक पर आबो तआम
और खुद भी सर झुका के बैठीं बालाए जमीन

देखते ही रोटियों के टुकड़े और पानी की मशक
हो गया आहो बुका का शोर ऐ 'फिक्रे' हज़ीन

फूल तो दो दिन बहारे जांफ़िज़ा दिखला गए

जब वतन से कर्बला में शाहे वाला आ गए
तशना लब बच्चे भी कौसर का किनारा पा गए
जिस्मे नूरानी तपिश से धूप की सौंला गए
बाग़े ज़हरा के शजर सब धूप में कुम्हला गए

फूल तो दो दिन बहारे जांफ़िज़ा दिखला गए
हसरत उन गुन्चों पर है जो बिन खिले मुरझा गए।

नैज़ए क़ातिल दिले सदपाश अकबर देखिए
लाशे क़ासिम और सुमे असपाँ मुकद्दर देखिए
दशत में बेजा पड़े हैं औनो जाफर देखिए
तीर सा शोबा बराए हल्के असग़र देखिए

फूल तो दो दिन बहारे जांफ़िज़ा दिखला गए
हसरत उन गुन्चों पर है जो बिन खिले मुरझा गए।

दुख़तरे सरवर ने कैदे शाम में रेहलत जो की
रोए यूँ अहले हरम दीवारे ज़िन्दा हिल गयी
हज़रते आबिद चले ताबूत उठाकर जिस घड़ी
बेकसी मय्यत के आगे कहती जाती थी यही

फूल तो दो दिन बहारे जांफ़िज़ा दिखला गए
हसरत उन गुन्चों पर है जो बिन खिले मुरझा गए।

कर्बला में जिस घड़ी सुग़रा का आया नामाबर
नासिराने शाहेदीं बेजाँ पड़े थे ख़ाक पर
देखकर यह वाकेया पलटा जो वो ख़स्ता जिगर
जाके सुग़रा से मदीने में कहा सर पीट कर

फूल तो दो दिन बहारे जांफ़िज़ा दिखला गए
हसरत उन गुन्चों पर है जो बिन खिले मुरझा गए।

क़ैदे ज़िन्दा से हुए आज़ाद जब ज़ैनुल इबा
और छुटी बन्दे रसन से दुख़तरे मुशकिल कुशा
कर्बला में दफ़न जाकर सब शहीदों को किया
दशते ग़ुरबत से बराबर आ रही थी यह सदा

फूल तो दो दिन बहारे जांफ़िज़ा दिखला गए
हसरत उन गुन्चों पर है जो बिन खिले मुरझा गए।

दफ़न लाशें कर चुके जिस वक्त ज़ैनुल आबदीन
साथ रांडो को लिए पहुँचे मदीने के क़रीब
मुत्तला करने गया जिस दम बशीरे दिल हज़ी
कहते थे आवाज़ सुनकर यूँ मदीने के मकीं

फूल तो दो दिन बहारे जांफ़िज़ा दिखला गए
हसरत उन गुन्चों पर है जो बिन खिले मुरझा गए।

क्या लिखूँ ऐ 'फिक्र' दशते कर्बला के वाक़ियात
ख़त्म हो सकता नहीं ग़म का फ़साना ताहयात
भूखे प्यासे उठ गए जिस रोज से वह खुशसिफात
आज तक आवाज़ देते हैं लबेशत्ते फुरात

फूल तो दो दिन बहारे जांफ़िज़ा दिखला गए
हसरत उन गुन्चों पर है जो बिन खिले मुरझा गए।

बोली माँ दे गए तुम दाग़े जुदाई बेटा

बोली माँ दे गए तुम दाग़े जुदाई बेटा
हाय इस सिन में तुम्हें भी अजल आयी बेटा

तुमको दूल्हा भी न ऐ लाल बनाने पाई
के सिना सीने पर ज़ालिम ने लगाई बेटा

दिल में हसरत थी कि परवान चढ़ाती तुमको
पर यहाँ आके लुटी मेरी कमाई बेटा

शह अकेले हैं बस अब सो चुके ऐ लाल उठो
नींद कैसी अली अकबर तुम्हें आयी बेटा

किस लिए रूठे हो आओ मैं मना लूँ तुमको
कुछ जुबाँ से तो कहो सदक़े यह दाई बेटा

मय्यद आयी अली असगर की तो बोली यह रबाब
नींद इस प्यास में क्योंकर तुम्हें आयी बेटा

दिल में अरमा था के मैं दूध बढ़ाती लेकिन
हुयी पैकाँ से तेरी दूध बढ़ाई बेटा

रात अंधेरी है बियाबान में डर जाओगे
गोद में आओ यह क्या दिल में समाई बेटा

वारी इस दशत में मुझ कोखजली से छुट कर
हाय आग़ोशे लहद तुमने बसाई बेटा

छोटी सी लाश पर ऐ 'फिक्र' यह माँ कहती थी
घुटनियों चलने न पाए अजल आई बेटा

शहीद ज़हर से होना तो था

शहीद ज़हर से होना तो था हसन के लिए
बना था शिमर का ख़न्जर शहे ज़मन के लिए

है तौक़ आहनी सज्जाद ख़स्ता तन के लिये
और एहले बैत के बाजू फ़क़त रसन के लिए

लिबासे ख़ुल्द जिसे ईद मंे दिया हक़ ने
हजार हैफ़ वह मोहताज़ है कफन के लिये

जवान होने न पाए के रन में कत्ल हुए
थी कमसिनी की शहादत बिने हसन के लिए

थे कर्बला में सद अफसोस रोज़े आशूरा
ज़माने भर के मसाएब शहे ज़मन के लिए

यज़ीद के लिए तो तख़्तो ताज क्यों ऐ चर्ख़
सरे हुसैन है दरबार में लगन के लिये

जहाँ में शियों का जब तक गिरोह बाकी है
अलम रहेगा अलमदारे सफ़ शिकन के लिए

रसूले पाक जिसे चूमते थे रह-रह कर
छड़ी यजीद की है उस लबोदहन के लिए

फिराक़े पन्जे तने पाक में सदा रोईं
हुयी थी खिलक़ते गम शाह की बहन के लिए

जिन्होंने ख़ल्क में परदे की रस्म जारी की
वह एहले बैत है ज़ालिम की अन्जुमन के लिए

है 'फिक्र' हिन्द में बेताब या इमाम रज़ा
बुला लो रौजए अक़दस पर पन्जेतन के लिए

ग्यारह मुहर्रम

ग्यारहवीं माहे अज़ा को हुक्में इब्ने साद से
अपने मक़तूलों के लाशे फौज वालों ने चुने

और इकट्ठा करके दफ़नाया उन्हें पढ़कर नमाज़
पर नबी ज़ादों के लाशे धूप में जलते रहे

अपने कुशतों को शक़ी दफ़ना के जब फारिग हुए
लाए बेमहमिल शुतर अहले हरम के वास्ते

और बग़ैरे मक़्ना व चादर किया सब को सवार
तौक़ पहनाया गले मंे आबिदे दिलगीर के

सय्यदे सज्जाद के चेहरे का रंग उड़ता हुआ
देखकर ज़ैनब यह बोलीं आबिदे दिलगीर से

है यह क्या हालत तुम्हारी दिल को समझाओ ज़रा
वारिसों में अब तुम्हीं बाक़ी हो हम सब के लिए

सबर मैं क्योंकर करूँ आबिद ने ज़ैनब से कहा
अपने मक़तूलों के लाशे दफ्न उन्होंने कर दिए

पर मेरे बाबा की उरयाँ लाश है रन में पड़ी
देखूँ किन आँखों से जलती धूप में तपते हुए

बीबियों में हश्र था ऐ 'फिक्र' लाशे देखकर
पर शक़ी क़ैदी बना कर सूए कूफ़ा ले गए

बारह मुहर्रम (सुय्यम)

जहाँ में आज इब्ने साक़िए कौसर का सुय्यम है
क़तीले राहे हक़ सरदारे बहरोबर का सुय्यम है

रही जलती ज़मी पर लाश जिस मज़लूम की उरयाँ
उसी शाहे दो आलम कुशतए ख़न्जर का सुय्यम है

जो सक़्क़ाए सकीना और अलमबरदारे लशकर था
उसी दिल बन्दे हैदर गाज़िए सफ़दर का सुय्यम है

क़लम शाने हुए दरिया पा जिसके रोज़े आशूरा
करो मातम के आज उस सानिए जाफ़र का सुय्यम है

सिना सीने पा खाके जिसने अपनी जान दी रन में
इसी नूरे निगाहे शाहे दीं अकबर का सुय्यम है

जवानी रोएगी जिस पर क़यामत तक ज़माने में
इसी कड़ियल जवाँ हम शक्ले पैग़म्बर का सुय्यम है

न जो पुशते फ़रस पर कमसिनी में बैठ सकता था
ज़माने में इसी लख़्ते दिले शब्बर का सुय्यम है

शुजाअत और ग़ैरत जिसके सिन पर फ़ख़्र करती थी
इसी नाशाद कमसिन कासिमे मुज़तर का सुय्यम है

बढ़ाया दूध जिसका हुरमुला ने अपने पैकाँ से
अज़ीज़ो आज इस नादाँ अली असगर का सुय्यम है

हुआ था क़त्ल जो-जो नुसरते शाहे दो आलम में
उड़ाओ ख़ाक आज उन गाज़ियों सफ़दर का सुय्यम है

तुझे ऐ फिक्र' जिसकी क़ब्र पर जाने की हसरत है
उसी मज़लूम तशना लब शहे बे सर का सुय्यम है

इमाम का दसवाँ (20 मुहर्रम)

बैन करती थीं जैनब यह रोकर, मेरे भाई का दसवाँ हो क्योंकर
फातेहा किस तरह दे यह ख्वाहर, मेरे भाई का दसवाँ हो क्योंकर

अब न अकबर न हैं औनो जाफर, लुट गया कर्बला में भरा घर
कौन ले अब ख़बर हाय आकर, मेरे भाई का दसवाँ हो क्योंकर

फातेहा दूँ मैं किस किस का भाई, लुट गई हाय मेरी कमाई
सो रहे हैं ज़मीन पर बहत्तर, मेरे भाई का दसवाँ हो क्योंकर

है सकीना की भी ग़ैर हालत, देखी जाती नहीं उसकी सूरत
रोती है रात व दिन वह बराबर, मेरे भाई का दसवाँ हो क्योंकर

अब न अब्बास हैं और न कासिम है मदद मेरी इस वक्त लाज़िम
तुमको रोने न पाई यह ख़्वाहर, मेरे भाई का दसवाँ हो क्योंकर

हाय असग़र को भी तीर मारा, और अकबर भी जन्नत सिधारा
जख़्म दिल पर लगे हैं बहत्तर, मेरे भाई का दसवाँ हो क्योंकर

जालिमों ने सितम कैसा ढ़ाया, दश्ते गुरबत में मुझको रुलाया
कोई वारिस रहा अब न सर पर, मेरे भाई का दसवाँ हो क्योंकर

दिल लरजते थे सीनों में "रौशन", रंज से काँप जाता था हर तन
जब यह कहती थी सरवर की ख़्वाहर, मेरे भाई का दसवाँ हो क्योंकर

शहादत चौथे इमाम जैनुल आब्दीं (अलै.)

उठा पच्चीस्वी माहे अज़ा को आह बह आक़ा
के जैनुल आब्दीं जिसने था दुनिया में लक़्ब पाया

थी व पच्चानवे हिजरी हुआ था जब हशर यह बरपा
हुशाम इब्ने मलिक के ज़हर से मारे गए आक़ा

चबाया सूरते अशदर अंगूठा गो के शैताँ ने
मगर मसरूफ जब भी ताअते हक़ में रहे आक़ा

कुएँ में गिर पड़े बाक़िर न फ़र्क आया इबादत में
जुबां से उफ न की आदा ने गो बेहद सितम ढाया

बने जिनसे के मस होकर जवाहर आब के क़तरे
उन्हीं हाथों में हथकड़ियाँ पिनहायँ हैफ है आदा

किया था संगे असवद नस्ब हज़रत ही ने काबे में
लईनों ने मगर फिर भी इमामे वक़्त कब माना

था शमबे का तो दिन ऐ 'फिक्र' और - पनजुम थी शाबाँ की
वह सन् तेईस हिजरी था हुए थे आप जब पैदा

इमाम का बीसवाँ

मेहमान जिसे मकर से आदा ने बुलाया है बीसवाँ उसका
प्यासा जिसे आशूर के दिन दश्त में मारा है बीसवाँ उसका

और तीन दिन अफसोस रही धूप में मय्यत बेदफ्न ज़मीं पर
सर जिसका था नैज़े पर लईनों ने चढ़ाया है बीसवाँ उसका

था सानिये जाफर जो अलमदारे हुसैनी दरिया के किनारे
शाने कटे जिसके सूए फिरदौस सिधारा है बीसवाँ उसका

जो मश्क सकीना की लिए नहर गया था अफसोस की है जा
आदा ने जिसे गुर्ज़े ग़राबार लगाया है बीसवाँ उसका

था चश्मे हुसैन इब्ने अली की जो बसारत और क़ल्ब की क़ुव्वत
खा कर जो सिना सीने पर फिरदौस सिधारा है बीसवाँ उसका

था सूरत-ब सीरत में जो हमशक्ले पयम्बर लख़्ते दिले सरवर
खुद जिस पर जवानी को सदा नाज़ रहेगा है बीसवाँ उसका

कमसिन जो लड़ा फ़ौज से इब्ने शहे ख़ैबर लख़्ते दिले शब्बर
पामाल हुआ फूल सा तन दश्त में जिसका है बीसवाँ उसका

मैदान में शह पानी पिलाने जिसे लाए दामन में छुपाए
आशूर के दिन तीर से जो नहर हुआ था है बीसवाँ उसका

रह जाएगी ऐ 'फिक्र' तेरे दिल में यह हसरत होगी न ज़ियारत
तू हिन्द से रौज़े पर न जिस शाह के पहुँचा है बीसवाँ उसका

माँ छोटी सी मय्यत पा - जनाबे सकीना

माँ छोटी सी मय्यत पा यह रो-रो के पुकारी- ऐ शह की यतीमा
परदेस में क्या तुम भी ख़फा हो गयीं वारी- ऐ शह की यतीमा

सब्र आ गया लिपटा के सरे शाहे ज़मन को- क्या इसलिए चुप हो
थी बाप की फुरक़त में सदा गिरिया ओ ज़ारी- ऐ शह की यतीमा

हैं ज़ख़्म जो कानों में दिखा दो वह पदर को- रुखसार दिखा दो
और पीठ पर दुर्रो के निशा माँ गयी वारी- ऐ शह की यतीमा

रोती थी शबो रोज़ पदर के लिए ऐ जाँ- मादर गयी क़ुरबां
क्या पाते ही सर ख़ुल्द गयी तेरी सवारी- ऐ शह की यतीमा

किस बात पर रूठी हो ज़रा आँख तो खोलो- कुछ मुँह से तो बोलो
सदक़े गयी माँ चाँद सी सूरत पर तुम्हारी- ऐ शह की यतीमा

कुम्हला गया किस वासते यह फूल सा चेहरा- क्या हाल है तेरा
क्या तू भी सुऐ बाग़े जिनां आज सिधारी- ऐ शह की यतीमा

ज़िन्दाने बला में है क़यामत का अंधेरा- माँ क्या करे दुखिया
गुरबत में है बे गोरो कफ़न लाश तुम्हारी- ऐ शह की यतीमा

ऐ फिक्र' था जिन्दाँ मे बपा शोरे क़यामत- थमती न थी रिक़्क़त
सब एहले हरम कहते थे ब गिरिया ओ ज़ारी- ऐ शह की यतीमा

इमाम का महीना

बोलीं जिनदाँ में ज़ैनब यह रोकर - क़ैद में हो गया एक महीना
हम सभों की ख़बर लो बरादर - क़ैद में हो गया एक महीना

पास अपने बुला लीजे भाई - उठ नहीं सकती मुझसे जुदाई
सब्र कब तक करेगी यह ख़्वाहर - क़ैद मे हो गया एक महीना

अहले क़रिया ने मय्यत उठायी - दशते ग़ुरवत में तुरबत बनाई
हम तो अब तक हैं लाचारों मुज़तर - क़ैद में हो गया एक महीना

धूप दिन भर की और ओस शब की - गैर हालत है जिन्दा में सबकी
पहुचें क्योंकिर तुम्हारी लहद पर - क़ैद में हो गया एक महीना

है सकीना की भी गैर हालत - देखी जाती नहीं उसकी सूरत
कुढ़ती है आपकी प्यारी दुख़तर - क़ैद में हो गया एक महीना

शिमर ने बेख़ता दुर्रे मारे - और कानों से गौहर उतारे
बच्ची रोती है अब तक बिलखकर - क़ैद में हो गया एक महीना

जिनसे फिर जाए सारा ज़माना - 'फिक्र' उनका कहाँ पर ठिकाना
क्यों न हो जुल्म उन बेकसों पर - क़ैद में हो गया एक महीना

इमाम का चेहलुम

जहाँ में आज इब्ने साक़िए कौसर का चेहलुम है
क़तीले राहे हक़ सरदारे बहरोबर का चेहलुम है

रही जलती ज़मी पर लाश जिस मज़लूम की उरयाँ
उसी शाहे दो आलम कुशतए ख़न्जर का चेहलुम है

जो सक़्क़ाए सकीना और अलमबरदारे लशकर था
उसी दिल बन्दे हैदर गाज़िए सफ़दर का चेहलुम है

क़लम शाने हुए दरिया पा जिसके रोज़े आशूरा
करो मातम के आज उस सानिए जाफ़र का चेहलुम है

सिना सीने पा खाके जिसने अपनी जान दी रन में
इसी नूरे निगाहे शाहे दीं अकबर का चेहलुम है

जवानी रोएगी जिस पर क़यामत तक ज़माने में
इसी कड़ियल जवाँ हम शक्ले पैग़म्बर का चेहलुम है

न जो पुशते फ़रस पर कमसिनी में बैठ सकता था
ज़माने में इसी लख़्ते दिले शब्बर का चेहलुम है

शुजाअत और ग़ैरत जिसके सिन पर फख़्र करती थी
इसी नाशाद कमसिन कासिमे मुज़तर का चेहलुम है

बढ़ाया दूध जिसका हुरमुला ने अपने पैकाँ से
अज़ीज़ो आज इस नादाँ अली असगर का चेहलुम है

हुआ था क़त्ल जो-जो नुसरते शाहे दो आलम में
उड़ाओ ख़ाक आज उन गाज़ियों सफ़दर का चेहलुम है

तुझे ऐ फिक्र' जिसकी क़ब्र पर जाने की हसरत है
उसी मज़लूम तशना लब शहे बे सर का चेहलुम है

जनाबे रसूललिल्लाह व इमाम हसन (अलै.)

(28 सफ़र)

सफर की बिस्तो हशतुम को उठे दुनिया से पैगम्बर
इसी तारीख नाना के क़री जन्नत गए शब्बर

हुयी हिज़रत ज़माने से नबी की ग्यारह हिजरी में
सन् पन्जाह में मारा हसन को हाय सम देकर

न क्योंकर दोनों आँखों से बहें आँसू के दो ग़म हैं
जिगर का जख़्म है एक दूसरा दाग़े दिले मुज़तर

जनाबे सैय्यदा रोने न पायीं बाप के ग़म में
हुए क्या-क्या सितम बादे रसुल्लाह इतरत पर

जलाने आए बाबे इल्म पैगम्बर का दरवाज़ा
यह कैसा जुल्म था दुनिया में क्यों ऐ चरखे कीनावर

गिराया फात्मा ज़हरा पा दरवाजा लईनो ने
रसन में हैफ है बाँधा गुलुऐ हैदरो सफदर

ज़नाज़ा जब हसन का निज़्दे क़ब्रे मुस्तफा पहुँचा
तो बारिश चार जानिब से हुयी तीरों की लाशों पर

न पायी क़ब्र इस बेकस ने नाना के करीं है – है
चढ़ाते थे सदा काँधे पा जिसको अपने पैग़म्बर

ज़ियारत भी नहीं मुमकिन है ऐ 'फिक्र' इस ज़माने में
मिटाया नजदियों ने यूँ निशाने रोज़ए अतहर

शहादत ग्यारहवें इमाम हसन असकरी (अलै.)

(8 रबीउल अव्वल)

दिया ज़हर इब्ने अली उन नक़ी को
ज़नाबे इमाम हसन असकरी को

रखा क़ैद में मोतमिद ने हमेशा
न सय्यद पर आया तरस उस शक़ी को

दरिन्दों को जिस घर में पाला गया था
बुला कर वहाँ भेजा इब्ने अली को

नमाज़ आपने इस जगह जब अदा की
किए सजदे उन मूंज़ियों ने वली को

निकल आए पढ़कर नमाज़ आप लेकिन
न माना इमामे ज़मन मुत्तक़ी को

रिवायत में तहरीर है मोतमिद ने
दिया शरबते सम वसी ऐ नबी को

जिसे पीते ही ज़हर फैला जसद में
रहा तीन दिन क़र्ब इब्ने अली को

थी वह माह सुय्यम की तारीख़ हशतुम
छिपाया तहे खाक़ हक़ के वली को

था सन दो सौ और साठ हिजरी वह ऐ 'फिक्र'
दिया सबने पुरसा अली और नबी को

जनाबे फातेमा ज़हरा (अलै.)

उठी है आज वह ऐ मोमिनो दुनिया से मासूमा
पदर के ग़म में आदा ने जिसे रोने से भी रोका

किए ऐसे जनाबे सैय्यदा पर ज़ुलम दुनिया में
रहीं बादे नबी पच्चानवे दिन दहर में ज़हरा

समझ के बकसो - बेबस नबी ने बाद आदा ने
किया बाग़े फिदक भी गज़ब तोड़ा घर का दरवाजा

न बे इज़्न आया जिस घर में मलक दर आये वाँ नारी
गला बांधा अली का मिन्नते करती रहीं ज़हरा

किए थे यू वसाया फात्मा ज़हरा ने हैदर से
के उन लोगों को मेरी लाश पर हरगिज़ न बुलवाना

तुम अपने हाथ से ग़ुस्लो कफ़न या बुल हसन देकर
पढ़ाना ख़ुद नमाज़ और दफ़्न करना खुद मेरा लाशा

न पड़ जाए नज़र न महरमों की मेरी मय्यत पर
शबे तारीक में ताबूत सुए क़ब्र ले जाना

ख़ता ख़िदमत गुज़ारी में हुयी हो गर कोई मुझसे
समझकर अपनी लौंडी बहरे ख़ालिक अफ़ो कर देना

बड़ी मेहनत से चक्की पीस के पाला है बच्चों को
ख़्याल ऐ बुल हसन रखना मेरे बाद इन यसीरों का

अगर कोई ख़ता हो या अमरिल मोमिनीं इनसे
सज़ा देने से बे माँ का समझकर दर गुज़र करना

दिनों तारीखों साल ऐ 'फिक्र' यू रहलत का लिखा है
दो शमबा तीसरी माहे शशुम सन ग्यारह हिजरी था

दसवे इमाम (अलीउन नक़ी)

शहीद ज़हर दिलो ज़ाने फात्मा ज़हरा
दहुम इमाम अलीउन नक़ी शहे वाला

शहीद इमाम महोम्मद तक़ी हुए थे जब
तो छः बरस के मदीने में थे इमामे हुदा

किया तलब मुतव्विकिल ने भेज कर नामे
गए इराक़ तो फिर शाहे दीं को क़ैद किया

रहे हिरासते शाही में बारह साल मगर
रही इताअतो तबलीग़े हक़ की फिक्र सदा

थे बहरे इल्म का फैज़ अज़ इराक ताबा अजम
हर एक सिमत से आते थे इलम के जोया

ख़िलाफ गुजरी जो हज़रत की शोहरते इलमी
तो शाहे वक़्त को अब्बासियों ने भड़काया

जब आ गया मुतवक्कील को मौत का पैग़ाम
तो सल्तनत में बहुत सख़्त इन्क़िलाब हुआ

तो आया तख़्ते ख़िलाफत पा मोतज़िल मलऊन
तो ज़हर इसने इमामे ज़मन को दिलवाया

था साल हिज़री वह दो सौ पचास ब चार ऐ 'फिक्र'
दो शमबा तीसरी माहे रजब को हशर हुआ

छठे इमाम (जाफिरे सादिक)

करो उस इमामे शशुम पर बुका
जो पन्द्रहवीं माहे रजब को उठा

या

करो उस इमामे शशुम पर बुका
जो शव्वाल की पन्द्रह को उठा

ख़िलाफत जों ही पायी मन्सूर ने
तो चुन-चुन के सादात का ख़ूँ किया

दरख़्तों पा लटकाए सर सैकड़ो
हज़ारों को दीवारों में चुन दिया

बुलाया कई बार इन्हें भी मगर
था ऐजाज़ जालिम न कुछ कर सका

हुआ क़त्ले सादात से जब फ़राग़
तो आमादा फिर कत्ले शै पर हुआ

बिने ज़ैद को देके कुछ मालो ज़र
मकाँ पहले नारी से जलवा दिया

मदीने के हाकिम को फिर भेजा हुक्म
न जिन्दां रहे सादि़क़े बा सफ़ा

मुहम्मद सुलेमान के फ़रजन्द ने
इन्हें ज़हर अंगूर में दे दिया

लिखो 'फिक्र' मनकूत मे साले फौत
हुए जाफर इब्ने मुहम्मद जुदा

सातवें इमाम (मूसिए काजिम)

इमामे हफतुमी मूसीए काज़िम दिलबरे ज़हरा
वसीए सादिके आले नबी को ज़हर से मारा

मुकय्यद सत्तरह साल आप ज़िन्दा में रहे पैहम
मगर शिकवा बजुज़ जिक्रे खुदा लब तक नहीं आया

नमाज़े पढ़ता था वक़्ते फज़ीलत रोज़ादार उठकर
फ़रागत पाते ही करता था फिर माबूद का सजदा

सुना यूँ शह को कहते बारहा दरबारे ज़िन्दां ने
के ख्वाहिश थी दिया तूने मुझे ताअत को घर तन्हा

थे एक दिन मुबतिलाए दर्द मौला यह ख़बर सुनकर
तबीबे ख़ास को हारुन रशीदे नहस ने भेजा

यह फहमाएश हकीमे रू सियाह से की थी ताकीदन
दवा में इब्ने फ़रज़न्दे नबी को ज़हर दे देना

पिलाई हस्बे फरमाएश तबीबे ख़ास ने शह को
दवा पीते ही हाल अबतर हुआ मज़लूमो बेकस का

रजब की बिस्तो पंजुम जुमा सन एक सौ तिरासी में
इमामे हफतुमी को बेहया ने ज़हर से मारा

सफ़र की सत्तरह यकशम्बा था सन एक सौ अट्ठाईस
इमामे मुसिए काज़िम हुए थे 'फिक्र' जब पैदा

इमाम अली (अलै.)

19

चले हैं जानिबे मस्जिद अली हरेक रोता है
गरेबाने सहर भी मोमिनों अब चाक होता है

सितारा सुबह का है छेड़ता दिल के फफोलों को
हरेक झोंका नसीमे सर्द का नशतर चुभोता है

इमाम अव्वलीं की आखरी शब है इबादत है
चराग़े जिन्दगी कुछ देर में खामोश होता है

लिपटती है उधर मुरग़ाबिया कदमों से हज़रत के
इधर हर हल्कए ज़न्जीरे दर में शोर होता है

बता ऐ मसजिदे कूफा तहे मेहराब पिछले से
छुपाये तेग़े सम आलूद यह कौन आज सोता है

अली इब्ने अबि तालिब का ग़म वह ग़म है आलम है
के जो सुनता है वह रो-रो के अपनी जान खोता है

शबे बिस्ते यकुम रमज़ान सन चालीस हिज़री से
फलक भी रोज़ पर्दे में शफख़ के ख़ून रोता है

बुला लो जल्द आका 'फिक्र' को भी अपने रौज़े पर
के अब ज़िक्रे नजफ से वह बहुत बेताब होता है

इमाम अली (अलै.)

20

ऐ मोमिनो है बीसवी माहे रमाजाँ की - वा हसरतो दरदा
बतलाती है बढ़ती हुयी हसरत यह मकाद्द की - वा हसरतो दरदा

अब नूर न देखेगा कोई शेरे ख़ुदा का - गुल होगा बुका का
रौनक है फख़्त एक ही शब बज़्मे जहाँ की - वा हसरतो दरदा

जब ज़ख़्मे सरे शाह को जर्राह ने देखा - सर पीट के बोला
उम्मीद नहीं सेहते सरदारे जहाँ की - वा हसरतो दरदा

हर कूचओ बाजार में है शोरे क़यामत - कैसी है मुसीबत
बदली हुयी हालत है हर एक पीरो जबाँ की - वा हसरतो दरदा

हसनैन भी बेताब हैं ज़ैनब भी है मुज़तर - हम रोएँ न क्योंकर
रुखसत है कोई आन में शाहे दो जहाँ की - वा हसरतो दरदा

बिन बाप के बच्चों की बहुत गैर है हालत - थमती नहीं रिक़्क़त
अब कौन ख़बर लेगा यतीमाने जहाँ की - वा हसरतो दरदा

देखा है लहू जब से सरे शाहे हुदा का - अनधेर है दुनिया
बेताब है मौजें भी हर एक बहरे रवाँ की - वा हसरतो दरदा

इस ग़म से सरे मौजे सबा जिन भी हैं गिरियाँ - है हशर का सामाँ
आवाज़ हवाओं से भी आती है फुगाँ की - वा हसरतो दरदा

अब कर यह दुआ हक से मयस्सर हो ज़ियारत - बर आए यह हसरत
आगे नहीं ऐ 'फिक्र' बस अब ताब बयाँ की - वा हसरतो दरदा

इमाम अली (अलै.)

21

वसीए मुस्तफा का मोमिनो ताबूत जाता है
हर एक पीरो जबाँ इस ग़म में सर पर ख़ाक उड़ाता है

यतीमाने अली रोते हैं जो सर पीट के पैहम
तो हर आँसू का क़तरा अरश को जुमबिश में लाता है

चले हैं लेके ताबूते पदर शब्बीर और शब्बर
जनाबे ज़ैनबो कुलसूम को ग़श-पा-ग़श आता है

है एक शोरे क़यामत कूचओ बाजार में बरपा

नजफ़ की सिमत कूफ़े से जनाज़ा शह का आता है

इधर हसनैन ताबूते पदर पर सर्फ़े गिरियाँ हैं

तलातुम है उधर दजले का पानी जोश खाता है

मकीने खानेए माबूत उठा है आज दुनिया से

ये सन्नाटा हमें कूफे की मसजिद का बताता है

है एक सकते का आलम आज तक एक-एक ज़र्रे पर

दरो-दीवारे कूफे से ग़मे शह उमड़ा आता है

नजफ जाने की ऐ 'फिक्र' हसरत तो बहुत लेकिन

ज़ियारत हो मयस्सर देखिए वह दिन कब आता है

आठवें इमाम (इमाम मूसिए रज़ा)

मसमूम हुए लख़्ते दिले साकिऐ कौसर वाहसरतो दरदा
मूसिए रज़ा मोमिनों के आठवें रहबर वाहसरतो दरदा
मामून ने पहले तो मदीने से बुलाया नाना से छुड़ाया
फिर ज़हर दिया अपना वली अहद बनाकर वाहसरतो दरदा
लिखा है के एक रोज़ करीब अपने बुलाकर इज्ज़त से बिठाकर
अंगूर बा इसरार दिए ज़हर मिला कर वाहसरतो दरदा
गो इल्म था पर मरज़िए हक़ से रहे मजबूर और खा लिए अंगूर
खाते ही जिसे शाह की हालत हुई अबतर वाहसरतो दरदा
फैला असर उड़ने लगा रंगे रुख़े पुरनूर और रख दिए अंगूर
फिर आबे अनार आह दिया ज़हर मिलाकर वाहसरतो दरदा
उठकर चले फौरन ही तो मामून ने पूछा है क़स्द कहाँ का
फरमाया वहाँ जाता हूँ भेजा है जहाँ पर वाहसरतो दरदा
यह कहते ही वापस हुए बैतुल शरफ़ आक़ा अफसोस की है जा
दुनिया से उसी शब को सिधारे सूए कौसर वाहसरतो दरदा
तेईसवीं ज़ीक़ाद जुमेरात के दिन आह महशर हुआ बरपा
सन् दो सौ दो सद् हिजरी में मातम हुआ घर घर वाहसरतो दरदा
गो डेढ़ बरस बसरे में ऐ 'फिक्र' रहे हम लेकिन यह रहा ग़म
मशहद की ज़ियारत न हुई फिर भी मयस्सर वाहसरतो दरदा

नवें इमाम (इमाम मोहम्मद तक़ी)

जवानी रोएगी जिस पर सदा वह कुशतए ग़म

नवें इमाम मोहम्मद तक़ी शहे आलम

जुदा पदर से हुए पाँच साल के सिन में

गए इमाम रज़ाए ग़रीब सूए अजम

रहे मदीने में छः साल बाप से छुटकर

के मोतासिम ने बुलाया इराक़ में बासितम

रखा बाइज़्ज़तो तौक़ीर पहले पास अपने

दिलाया खाने में फिर शाहेदीन को ज़हरे सितम

है दूसरी यह रिवाएत था ज़हर शरबत में

के जिस से राहिए जन्नत हुए इमामे नहुम

थी ज़ौजा आपकी मामूं रशीद की दुख़्तर

उस उम्मे फ़ज़्ल के हाथों हुआ यह जुल्म व सितम

गरज़ के कातिले हज़रत है मोतसिम बिल्लाह

दिया हो खाने मे था शरबते अनार में सम

सहशम्बा और थी उन्तीस माहे ज़ीक़ादा

सिधारे दो सदो बिस्तुम में शाह सूए इरम

हुई है जिन्दगी दुशवार हिन्द में अब तो

बुला लो 'फिक्र' को रौज़े पर या शहे आलम

पाचवें इमाम (मुहम्मद बकिर)

शहादत पा गए ज़हरे दग़ा से पाँचवे रहबर

इमाम इन्सो जिन हज़रत मोहम्मद बाकिरे अतहर

हुशाम इब्ने मालिक जब आपसे कुछ बहस करता था

शिकस्त उसको बराबर देता था वह इब्ने पैग़म्बर

कुदूरत के सबब बहरे तलब एक रोज़ ज़ालिम ने

किया घोड़ा रवाना ज़ीने सम आलूद कसवा कर

सुना जिस दम सवारी आई है दरबारे शाही से

हरम से मिलके निकले और बैठे पुश्ते मरकब पर

असर फैला जसद में ज़हर का मरकब पर जब बैठे

हुआ माएल बासबज़ी चन्द साअत में तने अनवर

दो शम्बा सात ज़िहिज्जा सन् एक सौ सोलह हिज़री थे

उठा दुनिया से जब नूर निगाहे आबिदे मुज़तर

सह शम्बा पन्द्रहा माहे रजब थी साल सत्तावन

हुआ था 'फिक्र' जब पैदा वह इब्ने साकिए कौसर

हज़रत मुस्लिम इब्ने अक़ील

दाखिले कूफ़ा हुआ जब नायबे सुलताने दीं
अज़रहे मक्र आए बैअत को हज़ारों मुशरकीन
ले ली बैअत कूफ़ियों से हज़रते मुस्लिम ने जब
नामा एक बहरे तलब भेजा सुए सुल्ताने दीन
बाद इसके हो गए सब अहले कूफ़ा मुनहरिफ़
और बराए क़त्ले मुस्लिम आ गई फ़ौजे लईन
आलमे तन्हाई शिद्दत प्यास की जाएँ कहाँ
अब कहीं ढूँढे से भी जाए अमाँ मिलती नहीं
इत्तेफ़ाक़न राह में जब ख़ानए तौआ मिला
तब कहा पानी पिला दे बहरे ख़त्मुल मुरसलीन
जाम पानी का पिला कर मोमिना ने बाअदब
आपसे नामो निशाँ पूछा बाआवाज़े हज़ीन
बादे इसरार उससे हालत बेकसी की जब कही
सुनते ही नाम अपने घर में ले गई वह पाकदीन
रात भर मेहमान रहे लड़के ने उसके सुबह को
हाकिमे कूफ़ा से कहकर भेज दी फौजे लईन
घर से निकले सुनते ही घोड़ों के टापों की सदा
और खैंचीं तेग़ बहरे कत्ले फौजे मुशरकीन
हो गए जब आपसे मग़लूब वह मक्कार सब
करके ख़सपोश एक गढ़े को हट गए पीछे लईन
लड़ते-लड़ते हज़रते मुस्लिम गिरे उस ग़ार में
हमलावर नैज़ों से बेकस पर हुए आदाए दीन

बादे कत्ल एक रीसमा से पाए मय्यत बांधकर

खैंचते फिरते थे बाज़ारों में कूफ़े के लईन

कर दुआ ऐ 'फिक्र' ख़ालिक़ से के मर जाने के बाद

क़ब्र को मिल जाए निज़्दे रौज़ए मुस्लिम ज़मीन

सैय्यद विरासत अली रिज़वी

'फिक्र लखनवी'

पैदाइश - 1892

वफात - 10 सितम्बर 1960

शम्बे के रोज़ दसवीं सितम्बर को नौ बजे
मौत आई कैंसर से मर्ज़ था जो लाइलाज

'असगर' को ईसवीं में यह रिज़वाँ ने दी खबर
जन्नत मिली अली से विरासत अली को आज

सैय्यद विरासत अली रिज़वी वल्द सैय्यद महोम्मद मुस्तफा - एक सूरए फातिहा के मुतामन्नी